International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रोमन कैथोलिक चर्च सरधना एक पुरातात्विक स्थल

डॉ० कृष्ण कान्त शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
मुल्तानीमल मोदी कॉलिज, मोदीनगर, गाजियाबाद (उ०प्र०)

मुकेश चौधरी
शोधार्थी , इतिहास विभाग,
मुल्तानीमल मोदी कॉलिज, मोदीनगर, गाजियाबाद (उ०प्र०)

शोध सार

सरधना क्षेत्र की प्राचीनकाल से अपनी एक अलग पहचान रही है। यह क्षेत्र मेरठ जनपद के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र से लगभग 22 कि0मी0 दूर स्थित है। मुगलसम्राट शाह आलम ने यह क्षेत्र जागीर के रूप में वाल्टर रेनहार्ड समरू नामक एक सैन्य अधिकारी को प्राप्त हुआ जोकि मूलतः जर्मन थे उन्होंने एक नर्तकी बेगम समरू से विवाह किया। बेगम समरू जोकि मुस्लिम थी उन्होंने ईसाई मत को स्वीकार किया तथा रेनहार्ड की मृत्यु के पश्चात् सरधना क्षेत्र की जागीर को सम्भाला तथा यहाँ कैथोलिक धर्म से सम्बन्धित एक भव्य एवं आकर्षक चर्च का निर्माण कराया जोकि संगमरमर से बनी एक अद्भुत इमारत है। यह भारत ही नहीं एशिया के सर्वाधिक प्राचीन चर्चों में से एक है। इसे स्वयं पोप ग्रोगोरी ने मान्यता प्रदान की थी। इटली के प्रसिद्ध आर्किटेक्टएन्थोनी रेघल्लीनी द्वारा इस चर्च को डिजाइन किया गया था, इसके अतिरिक्त कैथोलिक कब्रिस्तान तथा सन्त जॉन सेमिनरी भी यहाँ के प्रमुख स्मारक हैं। जो सरधना क्षेत्र की ऐतिहासिकता को प्रमाणिक करते हैं।

मुख्य शब्द :कैथोलिक चर्च, बेगम समरू, वाल्टर रेनहार्ड, कैथोलिक कब्रिस्तान, सन्त जॉन सेमिनरी।

सरधना क्षेत्र भारतीय इतिहास में प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक अपनी एक अलग पहचान रखता है, यह स्थल मेरठ के तीन तहसील क्षेत्रों में से एक है। सरधना उत्तरी, अक्षांश $29^0$9′ और पूर्वी देशान्तर $77^0$38′ पर स्थित है। यह स्थानीय दो नदियों हिण्डन एवं काली नदियों के मध्य स्थित है।[1] सरधना मेरठ जनपद के उत्तरी पश्चिमी क्षेत्र में लगभग 22 कि0मी0 की दूरी पर स्थित है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सरधना के नामकरण के संबंध में अनेक जनश्रुतियाँ प्रचलित है। क्षेत्रीय परम्परा के अनुसार राजा सरकट ने सरधने की स्थापना की थी।[2] राजा सरकट के नाम पर ही इसका नाम सरधना पड़ा। जनश्रुति के अनुसार मुगल काल से पहले सरधना एक छोटा–सा ग्राम था, श्रीधन नामक साधू यहाँ कुटी बनाकर रहने लगा और उसी के नाम पर यह गाँव श्रीधना कहलाने लगा।[3] वर्तमान नाम श्रीधना का ही अपभ्रंश सरधना है। जोकि तर्कसंगत प्रतीत होता है। एक अन्य जनश्रुति के अनुसार सर वाल्टर रेनहार्ड समरू के नाम के आधार पर इसका नाम सरधना पड़ा और बेगम समरू के कारण इस क्षेत्र में ऐतिहासिक महत्व में भी इजाफा हुआ।[4]

वाल्टर रेनहार्ड समरू एक सैनिक के रूप में भारत आया था। इसने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला, भरतपुर के राजा जवाहर सिंह, दिल्ली के तत्कालीन मुगल सम्राट शाह आलम आदि की सेना में कार्य किया। 1773 ई0 में मुगल सम्राट शाह आलम ने वाल्टर रेनहार्ड समरू से प्रसन्न होकर उसे सरधना की जागीर प्रदान की।[5]रेनहार्ड समरू कुछ दिनों तक ही सरधना में रहा क्योंकि उसे गवर्नर बनाकर आगरा भेज दिया गया और सन् 1778 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी। फरज़ाना रेनहार्ड समरू की पत्नी होने के कारण बेगम समरू के नाम से विख्यात हो गयी। शाह आलम ने उसे वाल्टर रेनहार्ड समरू का उत्तराधिकारी बनाया। बेगम समरू ने 7 मई 1781 ई0 को बपतिस्मा पाया और ईसाई मत ग्रहण करने के कारण उसका नाम योहाना रखा गया।[6]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रोमन कैथोलिक चर्च सरधना, मेरठ

सरधना एक ऐतिहासिक एवंपुरातात्विक स्थान है। यहाँ पर मुख्यरूप से विश्वविख्यात ऐतिहासिक रोमन कैथोलिक चर्च स्थित है। इस चर्च की नींव सन् 1809 ई0 में रखी गयी थी और इस चर्च का निर्माण बेगम समरू ने 1822 ई0 में कराया था।[7] चर्च के निर्माण में बेगम समरू के जीवन काल के 14 वर्ष लगे। इसके निर्माण में लगभग चार लाख व्यय हुए। इस चर्च की विशेष खासियत यह है कि **सेन्ट्रल लन्दन, जोन वन** में स्थित चर्च और इस चर्च के वास्तु में कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता है। इस चर्च की बनावट तथा इंग्लैण्ड में स्थित अधिकांशतः चर्चों की डिजाईन लगभग एक जैसी ही नज़र आती है। सरधना स्थित इस रोमन कैथोलिक चर्च की शैली इटली के प्रसिद्ध आर्किटेक्ट **एंथनी रेघल्लीनी**ने तैयार की थी।[8]

चर्च के निर्माण में संगमरमर के पत्थरों का प्रयोग अधिकता से किया गया है। संगमरमर से बनी मूर्तियाँ इस चर्च की सुन्दरता में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इन संगमरमर के पत्थरों को विशेषरूप से इटली से मंगाया गया था। इस चर्च की भव्यता और सुन्दरता से बेगम समरू और अंग्रेज अधिकारी बहुत प्रभावित थे। तथा इस बात का अन्दाजा बेगम समरू के उस पत्र से लगाया जा सकता है जो उन्होंने सरधना चर्च के तैयार होने के उपरान्त संत **पोप ग्रोगोरी**16वें को लिखा था कि–''एन्थोनी रेघल्लीनी द्वारा तैयार किये गये डिजाईन के आधार पर जिस चर्च का निर्माण किया गया है। वह आज हिन्दुस्तान के चुनिंदा इमारतों तथा ऐतिहासिक इमारत का दर्जा प्राप्त कर चुकी है। इस चर्च के निर्माण से मैं बेहद प्रसन्न हूँ और आपको चर्च के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विषय में लिखते हुए गर्व का अनुभव कर रही हूँ। न केवल मेरे लिये यह गर्व का विषय है बल्कि ब्रिटिश सरकार को भी प्रस्तुत चर्च के माध्यम से रहती दुनिया तक याद किया जाता रहेगा। इस चर्च को हिन्दुस्तान में अव्वल दर्जे का आंका गया है।''[9]

चर्च में एक बड़ा बरामदा है जिसमें 18 भव्य खम्भे हैं। इस चर्च में बड़े अल्तार के ऊपर तथा दोनों तरफ बने अल्तारों पर तीन गुम्बद हैं। ये तीनों गुम्बद रोम में बने संत **पेत्रुस**के महागिरजाघर के गुम्बदों से काफी मिलती जुलती हैं। इनमे दो मीनारें काफी ऊँची हैं। चिकनी स्लेट का बना हुआ अष्टकोणीय रोशनदान भी हैं। जिसमें सुराख बने हुए हैं और इन रोशनदानों पर काले और सफेद संगमरमर का ढकना भी लगा है। इन सभी कला वस्तुओं को देखने से मुस्लिम स्थापत्य कला की भी याद दिला देते हैं।[10]

चर्च के बड़े दरवाजे से अल्तार के जंगले के बीच के हिस्से का फर्श सफेद संगमरमर का बना हुआ है। गुम्बददार छत और मेहराबदार प्लास्टर में रोमी और पूर्वी कला के नमूने देखने को मिल जाते हैं। चर्च की वेदी में अंधेरा छाया रहता है लेकिन अल्तार और ईसा की मूर्ति पर चमकती हुई रोशनी दिखाई पड़ती है जो इसकी सुन्दरता को और भी मोहक बना देते हैं। यह बहुत ही कम लोगों को ज्ञात होगा कि इस चर्च को कथीड्रल भी कहा जाता था क्योंकि यहाँ कभी बिशप रहा करते थे जिसके कारण इसे कथीड्रल कहा गया।[11]

यदि चर्च को ध्यानपूर्वक देखा जाये तो ऐसा प्रतीत होता है कि इसका वास्तु क्रास के आकार का बना हुआ है।[12] इसकी एक विशेषता यह भी है कि जिस प्रकार

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यीशु की मृत्यु के समय उनके शरीर पर पाँच घाव थे उसी को मद्देनजर रखते हुए शायद पाँच गगनचुम्बी मीनारों पर इन्हीं घावों के साक्ष्य दिखाई पड़ते हैं, जिस पर बहुत ही कम दर्शकों का ध्यान जाता है। इस ऐतिहासिक चर्च को सन् 1924 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, भारत सरकार ने संरक्षित स्मारक घोषित किया और सन् 1961 में वसिलिका का दर्जा हासिल हुआ।[13]

कैथोलिक कब्रिस्तान, सरधना, मेरठ

सरधना चर्च के अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण एवं आकर्षकस्मारक भी है, जिसे कैथोलिक कब्रिस्तान के नाम से जाना जाता है और इस कैथोलिक कब्रिस्तान का सीधा सम्बन्ध रोमन कैथोलिक चर्च, सन्त जॉन सेमिनरी, सर वाल्टर रेनहार्ड समरू, बेगम समरू तथा बेगम के नये महल में रहने वाले लोगों एवं उनके वंशजों से है। इस कब्रिस्तान के बीचो बीच बेगम समरू के वंशजों का मकबरा स्थित है।

यह कैथोलिक कब्रिस्तान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, भारत सरकार का संरक्षित स्मारक है। सरधना में प्रवेश करने से थोड़ा पहले एक सड़क बस स्टैण्ड के सामने से गुजरती है और इसी सड़क पर लगभग 200 मीटर की दूरी पर हिन्दू मन्दिर के पीछे बायीं तरफ नज़र डालें तो ये सुन्दर स्मारक दिखाई देने लगता है। इस कब्रिस्तान के बीचों–बीच बेगम समरू के वंशजों का मकबरा है और यह इस कब्रिस्तान में सबसे सुन्दर मकबरा है।

दूर से देखने पर यह मकबरा मुस्लिम कालीन मकबरों जैसा दिखता है। यह मकबरा चौकोर बना हुआ है और इसके बीच में गोल गुम्बद बना हुआ है। मकबरे के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ऊपरी भाग पर उल्टे कमल की भाँति अलंकरण किया गया है। सबसे ऊपर क्रास की धातु लगाई गयी है जो यह सिद्ध करती है कि यह कैथोलिक कब्रिस्तान है।

इसी स्थान पर बेगम समरू के बेटे लुईस बाल्थाज़ार, रेनहार्ड की बेटी जूलीआना ऐब और बेगम के गोद लिये बेटे डाईस समरू की माँ दफनाये हुए हैं। कब्रिस्तान में भीतर की ओर जाते हुए रास्ते की ओर बेगम के फ्राँसीसी पति लैवेसेड की कब्र भी बनी हुई है और इस कब्र पर फ्रेन्च भाषा में लाल पत्थर के ऊपर एक संदेश लिखा हुआ है। इसी कब्र पर एक तिथि भी अंकित है जो 18 अक्टूबर, 1795 ई0 की है।[14] जिस पर लिखा है **''पिये दियुपुर सोन आम रोक एसकाट इन पाचे''** जिसका अर्थ है खुदा से उसकी रूह के वास्ते दुआ करो, दूसरा हिस्सा लैटिन भाषा में है और इसका तर्जमा है ''उसकी रूह आराम से रहे''।[15] सही मायने में इस तिथि के अनुसार सरधना के नगर होने एवं इसकी ऐतिहासिकता का अनुमान लगाना कठिन नहीं होगा। इस कब्रिस्तान के अन्दर सबसे आकर्षक और दिलचस्प मकबरे पिरामिड के आकार की कब्रे हैं। इन कबों पर लिखे शिलालेखों के आधार पर इस तथ्य का आंकलन करना सरल हो जाता है कि इस कब्रिस्तान में अधिकतर कब्रों की संख्या एन्थोनी रेघल्लीनी के पारिवारिक सदस्यों की है।[16] इन शिलालेखों के माध्यम से ही यह ज्ञात हो जाता है कि बेगम समरू के अधीन विदेशी मूल के लोग भी कार्य करते थे जिसमें अंग्रेज, पुर्तगाली, फ्राँसीसी, इटालियन तथा अन्य देशों के नागरिक भी थे।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्त जॉन सेमिनरी, सरधना (मेरठ)

सरधना चर्च के आहाते से बाहर निकलते ही बायें तरफ एक भव्य व सुन्दर महल दिखाई देगा। इसी महल को सन्त जॉन सेमिनरी के नाम से जाना जाता है। इसके संबंध में जो भी अभिलेख हैं उनसे यह ज्ञात होता है कि इसका निर्माण वाल्टर रेनहार्ड समरू (बेगम समरू के पति) के जमाने से पूर्व कराया गया था। क्योंकि सन् 1773 में इस इमारत को मुगल शासन के दौरान स्वयं मुगलों द्वारा वाल्टर रेनहार्ड समरू को जागीर के रूप में दी गई थी। बेगम समरू के जीवन काल का भी अधिकांशः समय इसी महल में व्यतीत हुआ था। इस महल के पास से गंग नहर बहती और इस नहर का पानी तहखाने में भर जाता था और तहखाने में पानी भरा होने के कारण ऊपर के कमरों में हमेशा ठंड बरकरार रहती थी।[17]

जनश्रुति के अनुसार गर्मियों के दिनों में बेगम समरू इन्हीं कमरों में रहा करती थीं। इसमें बने कमरों की खासियत है कि अन्दर ही अन्दर एक दूसरे कमरे को जोड़ते हैं। एक जनश्रुति यह भी है कि जब अंग्रेजों ने मराठों पर शिकंजा कसा तो इसी महल में मराठों ने शरण ली थी। इस इमारत के बरामदे को स्तम्भों के माध्यम से बनाया गया है। इन स्तम्भों के माध्यम से इमारत की भव्यता काफी बढ़ जाती है। यह इमारत तत्कालीन इमारतों में से एक है।

कालान्तर में इस महल को बेगम समरू ने एक इटालियन योद्धा सोलारोली को दे दिया था। जब सोलारो की हिन्दुस्तान से अपने देश वापस हुआ तो इस महल को

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आगरा के कैथोलिक डाइसिस को खैरात में दे दिया और इस महल को पुरोहितों की शिक्षा के लिए सेमिनरी बना दिया गया।

सरधना क्षेत्र का ऐतिहासिक चर्च न केवल देश के विद्वानों, इतिहासकारों, शोधार्थियों बल्कि दुनियाभर के अलग–अलग स्थानों से आने वाले शोधार्थियों, इतिहासकारों व कैथोलिक परम्परा के अनुयायियों के लिए ऐसा ऐतिहासिक स्थल है जो अपनी भव्यता से आज भी प्रभावित करता है। आज वर्तमान में देश–दुनिया के शोधार्थी, इतिहासकार, कलमकार, विद्वान, दर्शनार्थी, पर्यटक व जिज्ञासु व्यक्ति यहाँ निरन्तर आते रहते हैं और अपने–अपने ढंग से इस ऐतिहासिक धरोहर पर अपने–अपने विचार रखते हैं। परन्तु इतना समय बीत जाने के बाद भी एक बात समान है कि इस ऐतिहासिक धरोहर की वह आन्तरिक छटा व बाहरी मनोरम दृश्य गाहे–बगाहे हर एक अवलोकनकर्त्ता के मुँह से भी सुना जा सकता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ सूची

1. ई0बी0 जोशी, उ0प्र0 जिला गजेटियर मेरठ, इलाहाबाद, 1965, पृ0सं0–359
2. शर्मा, कृष्णचन्द्र, 'मयराष्ट्र', मानस कृष्णादेवी शीतल प्रसाद जैन ट्रस्ट, सरस्वती परिषद, मेरठ, पृ0सं0–78 एवं जोशी ई0बी0, उ0प्र0 जिला गजेटियर मेरठ, इलाहाबाद 1965, पृ0सं0–339
3. शर्मा, कृष्णचन्द्र, मयराष्ट्र मानस, कृष्णदेवी शीतल जैन ट्रस्ट, सरस्वती परिषद, मेरठ, पृ0सं0–78
4. शर्मा, एम0ए0 दी लाईफ एण्ड टाइम ऑफ बेगम समरू ऑफ सरधना, पृ0सं0–45
5. पूर्ववत, पृ0सं0–45
6. कृपाओ की माता वसिंलिका, सरधना, फादर पैट्रिक, 1987 प्रेसीडेन्ट प्रेस, मेरठ, पृ0सं0–14 एवं अमर उजाला, मेरठ 15 अगस्त, 1997, पृ0सं0–09
7. जोशी, ई0बी0, उ0प्र0 जिला गजेटियर मेरठ, इलाहाबाद, 1965, पृ0सं0–359
8. एन्थेनी रेघल्लीनी का सरधने चर्च में लगे चित्र पर उत्कीर्ण लेख से उदत।
9. कृपाओं की माता वसिलिका, सरधना, फादर पैट्रिक, 1987 प्रेसीडेन्ट प्रेस, मेरठ, पृ0सं0–14
10. फजलों की माता की वसिलिका, सन्त लुक्स प्रिन्टर्स, मेरठ, चतुर्थ संस्करण, पृ0सं0–45
11. पूर्ववत, पृ0सं0–49
12. सेमुअल एलवर्ट, उम्र 42 वर्ष दिनांक 28 जून, 2008

13. चर्च में लगे शिलालेखों में उत्कीर्ण लेख के अनुसार।

14. कब्रिस्तान में कब्रों पर उत्कीर्ण लेख के अनुसार।

15. फजलों की माता वसिलिका, सन्त लुइस प्रिन्सर्स, मेरठ चतुर्थ संस्करण 2009, पृ0सं0–66

16. कब्रिस्तान में कब्रों पर उत्कीर्ण लेख के अनुसार।

17. दी जर्नल ऑफ दी मेरठ यूनिवर्सिटी हिस्ट्री एलुमिनी (गुहा) भाग–XIV, 2009, पृ0सं0–159